S-VI
Commu. Psy
DSE - IV

नन पेशेवरों के उपयोग की समस्याए

PROBLEMS IN THE USE OF NON PROFESSIONALS

अक्सर कुछ ऐसे व्यक्तियों की सेवाओं का उपयोग सामुदायिक मानसिक स्वास्थ कार्यक्रम मे किया जाता है जो अप औपचारिक रूप से प्रशिक्षित नही होते इन्हे ही ननपेशेवर की संज्ञा दी जाती है। ऐसे नन पेशेवर मे प्रायः स्कूल या कालेज के छात्र किशोर पौरुष महिलाए या अन्य वयस्क लोग जिन्हे मानसिक स्वास्थ के क्षेत्र मे कोई डिग्री या प्रशिक्षण प्राप्त नही होती है या अन्य कोई विशिष्ट सामाजिक पहचान नही होती है शामील किये जाते है। ऐसे लोगों की सेवाएं किसी अस्पताल, उपचार गृह सामुदायिक मानसिक कार्यक्रम स्कूल घर या देखभाल गृहशाला आदि मे प्राप्त की जा सकती है। जिसके बदले इन्हे कभी भुगतान किया जाता है तो कभी नही या कभी आंशिक भुगतान किया जाता है।

सामुदायिक मानसिक स्वास्थ कार्यक्रम में मेरे नन पेशेवरों की भूमिकाओं मनोवैज्ञानिकों ने यदि एक ओर काफी तारिफ किया तो वही इसी इनके उपयोग से कुछ उत्पन्न समस्याओं की तरफ भी ध्यानाकर्षण कराया जिनके कुछ प्रमुख निम्नलिखित है —

1. नन पेशेवरों के व्यक्तिगत गुणों एवं पृष्ठभूमियों से संबन्धित समस्याए — problems relating to personal qualities and backgrounds of professionals — नन पेशेवर व्यक्तियों मे वैसे शीलगुणों की नितान्त ही कमी रहती है जिससे रोगी की समस्याओं से निपटने मे मदद मिलती है। रिसमैन Reimman 1965 तथा कोवेन Cowen 1967 ने अपने अपने अध्ययनों के आधार पर बताया कि रोगी धनात्मक परिवर्तन लाने के लिए जिस तरह की सामर्थ्यता ज्ञान तथा ~~बुद्धि~~ ~~बुद्धि~~ बौद्धिक स्तर ~~नन पेशेवरों मे नही होती है~~ की जरूरत होती है वैसी स्तर की सामर्थ्यता, ज्ञान

तथा वृद्धि नन पेशेवरों में नहीं होती है। इतना ही नहीं प्राय: ऐसे ननपेशेवर अपने कार्य में अधिक आवेष्टन (involvement) ताजगी उमंग एवं ताजगी दिखाते हैं तो इसका भी एक नकारात्मक प्रभाव पड़ता है इससे वास्तव में ननपेशेवर अपनी समस्या का रोगी पर प्रक्षेपण करते है और उनकी अनासक्ति जो रोगियों की समस्याओं को समझने के लिए आवश्यक है समाप्त हो जाती है।

2. ननपेशेवरों की भूमिका से संबंधित समस्या - Problems relating to non professional roles - नन पेशेवरों की भूमिकाएं अस्पष्ट होती है। यदि गौर किया जाए तो स्पष्ट होता है कि ये एक स्टाफ के रूप में होते है पर उन्हें मान्यता नहीं मिलती है जो एक पेशेवर को मिलती है जिसकारण नन पेशेवर अपने आप को शोषित तथा अपमानित महसूस करते है या कोई स्पष्ट भूमिका नहीं कर पाते है। इतना ही नहीं ननपेशेवरों को चूंकि बहुत अधिक ज्ञान नहीं होता है तथा जिंदगी के उतार चढाव से भली भांति परिचित नहीं होते हैं ~~जिसकारण~~ जिसकारण कई तरह की समस्याएं उत्पन्न हो जाती हो

3. पेशेवरों के मूल्यों से संबंधित समस्याएं - Problem relating to professional values - नन पेशेवरों के कार्य को स्वयं नन पेशेवर लोग ही ठीक से नहीं समझ पाते है क्योंकि वे एक पेशेवर मनोवृति विकसित कर लेते है। परंतु एक पेशेवर की प्रतिष्ठा एव सामाजिक स्तर ~~कैसे~~ तो नन पेशेवरों को नहीं मिलती। आम जनता भी नन पेशेवरों की भूमिकाओं का मूल्य समझती है परंतु उन्हे पेशेवर के समानांतर मानने को तैयार नहीं होती है। चूंकी ननपेशेवर अधिकांशत: प्रत्यक्ष सेवा मे ही लगे रहते है इसलिए पेशेवर अपना अधिक ध्यान सिर्फ प्रशिक्षण और निरीक्षण मे

दे पाते हैं तथा उपचार संबंधी सेवाओं की उपेक्षा हो जाती है जो अनुचित है। प्राय: ऐसी स्थिति में पेशेवर लोग अनुभवहीन नव पेशेवरों पर ही रोगी का उपचार तथा देखभाल पूर्णत: छोड़कर अपने आपको अन्य कार्यों में लगा लेते हैं जो रोगियों के मानसिक स्वास्थ्य की दृष्टिकोण से हानी कारक है। कभी - कभी तो यह भी देखा जाता है कि नव पेशेवर (वायकुर) कालेज के छात्र जो इस भूमिका में होते हैं मानसिक अस्पताल या सामुदायिक मानसिक स्वास्थ्य केन्द्रों में नीचले स्तर के स्टाफ से झगड़ बैठते हैं और उनपर अपनी श्रेष्ठता बनाये रखने के ख्याल से अम्मार दवाव डालते हैं रहते हैं इससे तनाव का माहौल उत्पन्न हो जाता है तथा रोगियों की परेशानियां बढ़ जाती है। अत: किसी मानसिक स्वास्थ्य केन्द्र में नवपेशेवरों की बहाली करने के पहले वहां के स्टाफ विशेषकर नीचले स्तर के स्टाफ की अभिरुचियाँ मनोवृत्तियों का अंदाजा लेना अनिवार्य हो जाता है।

4. कार्यक्रम संगठन प्रशिक्षण तथा जीविका वृत्ति विकास में समस्याए - problem in programme organization training and career development - स्पष्ट है कि नवपेशेवरों को कार्य परिस्थिति में ही थोड़ा बहुत प्रशिक्षण मिल जाता है। विश्वविद्यालयों या वैसे विशिष्ट संस्थान जहां पेशेवरों को प्रशिक्षण दिया जाता है वहां उन्हें किसी भी तरह का प्रशिक्षण या अनुभव प्राप्त करने का मौका नवपेशेवरों को नहीं दिया जाता है फले में नवपेशेवरों के प्रशिक्षण पर कम ध्यान देना स्वास्थ्य कार्यक्रम से संबंधित संगठनों में नवपेशेवरों की उपेक्षित भूमिका का कारण है। इनके इसके अतिरिक्त नवपेशेवरों की नौकरी पुरस्कार तथा

जीविकावृति विकास भी काफी सुदृढ नहीं होती और ये सरकारी धन या ऋण मिलने पर आधारित रहते है। इन अनिश्चितताओं के वातावरण मे ननपेशेवरों की समस्याएं स्वयं ही काफी उलझी हुई होती हैं ऐसे मे उनसे कुछ उम्मीद करना सूर्य को दीया दिखाने के ही समान होता है।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि नन पेशेवरों की सेवाओं से सामुदायिक मानसिक स्वास्थ कार्यक्रम मे समस्याए उत्पन्न हो जाती है। जिनसे इन केन्द्रों का काम सुचारु रूप से नहीं चल पाता है।

04/07/2020